Shodh Sangam Patrika
ISSN: 3049-0707 Volume 2 | Issue 1 | (Jan – Mar 2025)

1917 से 1942 तक बिहार के किसानों के संघर्षों में राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

Brajesh Kumar Rai[1] , Dr Anand Kumar Tripathi[2]

[1]Research Scholar, Department of history, Veer Kunwar Singh University Ara, Bihar

[2]Assistant Professor, Department of history, Rohtas Mahila College Sasaram Bihar

परिचय

1917 से 1942 तक बिहार के किसानों के संघर्षों में राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका का अध्ययन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और समाज सुधार आंदोलन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। यह अवधि भारतीय राजनीति में बदलाव का दौर था, जहां ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आम जनता, खासकर किसानों, ने सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शन किया। बिहार, जो कृषि प्रधान राज्य था, यहां के किसानों की समस्याओं और उनके संघर्षों को राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संबोधित किया गया। 1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह जैसे आंदोलनों ने न केवल बिहार के किसानों को जागरूक किया, बल्कि उन्हें संगठित भी किया। यह समय भारत के स्वतंत्रता संग्राम में किसान वर्ग की भागीदारी का प्रमुख समय था, और राष्ट्रीय कांग्रेस ने उनकी समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। किसानों की मुख्य समस्याएं भूमि कर, जमींदारी प्रथा, और बकाया कर थे, जिनके कारण उनका जीवन अत्यधिक कठिन हो गया था। ब्रिटिश शासन द्वारा निर्धारित ऊंचे कर और अन्य प्रशासनिक नीतियों ने किसानों को शोषण का शिकार बना दिया था। इन समस्याओं का समाधान नहीं होने पर, बिहार के किसान आंदोलनों का हिस्सा बन गए, जो राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख बन गए। कांग्रेस ने इन संघर्षों को एक राजनीतिक मंच पर उठाया और महात्मा गांधी के नेतृत्व में उन्हें सांविधानिक और कानूनी तरीकों से हल करने की दिशा में काम किया।

इस समय में कांग्रेस का प्रयास किसानों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के साथ–साथ उनकी राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाना था। चंपारण सत्याग्रह, काशी में किसानों का आंदोलन, और अन्य क्षेत्रीय संघर्षों में कांग्रेस की भूमिका ने यह स्पष्ट कर दिया कि कांग्रेस सिर्फ ब्रिटिश शासन के खिलाफ ही नहीं, बल्कि भारतीय किसानों की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के खिलाफ भी लड़ाई लड़ रही थी। इन संघर्षों के माध्यम से कांग्रेस ने किसानों को अपनी बात उठाने के लिए एक मजबूत मंच प्रदान किया और उनका संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा बन गया।

मुख्य भाब्द : राजनीतिक, किसान, असमानताएं, बदलाव, चंपारण, सत्याग्रह।

किसानों की समस्याएं और संघर्ष

आर्थिक और सामाजिक समस्याएं

बिहार के किसानों की आर्थिक स्थिति ब्रिटिश शासन के दौरान अत्यधिक खराब थी, और यह आर्थिक शोषण के कारण था। बिहार, जो एक कृषि प्रधान राज्य था, वहां के अधिकांश किसान भूमिहीन या छोटे भूमिधारी थे। भूमि कर, जो ब्रिटिश शासन द्वारा किसानों पर थोपे गए थे, अत्यधिक और असमान थे। इनमें से कई कर किसानों की आमदनी से अधिक थे, जिसके कारण वे कर्ज में डूब जाते थे। इसके अलावा, जमींदारी प्रथा ने भी किसानों को कठिन स्थिति में डाला। जमींदारों द्वारा किसानों से अत्यधिक कर लिया जाता था, और उन्हें अपनी फसल का बड़ा हिस्सा जमींदारों को देना पड़ता था। सामाजिक

दृष्टि से भी बिहार के किसानों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। जातिवाद और सामाजिक असमानताएं उनके जीवन का हिस्सा थीं। उच्च जाति के जमींदारों द्वारा निम्न जाति के किसानों पर शोषण किया जाता था। इसके अतिरिक्त, किसानों को अपनी फसल के उचित मूल्य की प्राप्ति नहीं होती थी, और मध्यस्थों के माध्यम से उनका शोषण और अधिक बढ़ जाता था। यह आर्थिक और सामाजिक समस्याएं बिहार के किसानों के लिए अत्यंत कठिनाईपूर्ण स्थिति उत्पन्न करती थीं। ब्रिटिश शासन ने कृषि उत्पादों पर उच्च कर लगाए थे और किसानों को अपनी आवश्यकता के अनुसार उपज नहीं उगाने दिया, बल्कि उन्हें अंग्रेजों के लिए आवश्यक वस्त्र और अन्य वस्तुएं उगाने के लिए बाध्य किया जाता था। इससे किसानों की जीवन–यापन की स्थिति और भी बदतर हो गई।

असंतोष और संघर्ष

बिहार के किसानों के बीच असंतोष और संघर्ष का कारण ब्रिटिश शासन के शोषणकारी नीतियां थीं, जिन्होंने किसानों के जीवन को दूभर बना दिया था। जब भूमि कर और जमींदारी प्रथा के तहत किसानों का शोषण बढ़ा, तो किसानों में एक असंतोष की भावना पनपी। उन्हें अपनी उपज का पूरा मूल्य नहीं मिल रहा था, और उच्च करों के कारण उनका जीवन कठिन हो गया था। इसके साथ ही, वे अपने परिवार की आजीविका चलाने में असमर्थ हो गए थे, जिससे उनका गुस्सा और भी बढ़ गया था। यह असंतोष धीरे–धीरे संगठित संघर्ष में बदल गया। किसानों ने अपनी समस्याओं को उठाने के लिए आंदोलनों का सहारा लिया। इन आंदोलनों में, किसानों ने विरोध प्रदर्शन किए और अपनी उपज पर उचित मूल्य की मांग की। बिहार के विभिन्न हिस्सों में किसानों ने गुस्से में आकर जमींदारों के खिलाफ संघर्ष किया। वे न केवल अपनी समस्याओं को हल करने के लिए लड़ रहे थे, बल्कि एक सामाजिक और राजनीतिक बदलाव की दिशा में भी कदम बढ़ा रहे थे। कांग्रेस ने इस असंतोष का फायदा उठाते हुए किसानों को अपने संघर्षों में जोड़ने की कोशिश की। कांग्रेस का मानना था कि किसानों के बिना स्वतंत्रता संग्राम अधूरा रहेगा। किसानों के संघर्ष को कांग्रेस ने न केवल राजनीतिक रूप से समर्थन दिया, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनाने के लिए भी प्रेरित किया। असंतोष और संघर्ष की यह प्रक्रिया किसानों के लिए एक जागरूकता की लहर बन गई, जिसने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

गया, चंपारण और आसपास के क्षेत्रों में संघर्ष

गया, चंपारण और बिहार के अन्य क्षेत्रों में किसानों के संघर्षों ने स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक सशक्त किया। इन संघर्षों का केंद्र चंपारण में हुआ था, जहां महात्मा गांधी ने 1917 में सत्याग्रह की शुरुआत की थी। चंपारण में किसानों पर अत्यधिक कर और अन्य शोषणकारी नीतियां लागू की गई थीं, जिनके खिलाफ किसान लंबे समय से संघर्ष कर रहे थे। गांधीजी ने चंपारण में सत्याग्रह के माध्यम से किसानों के अधिकारों की रक्षा की, जिससे बिहार के किसानों में एक नई जागरूकता और संघर्ष की भावना पैदा हुई। इसके बाद, गया और अन्य आसपास के क्षेत्रों में भी किसानों ने विरोध प्रदर्शन शुरू किए। गया जिले में, किसानों ने जमींदारों और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन किए। इन आंदोलनों ने न केवल किसानों के बीच एकजुटता बढ़ाई, बल्कि कांग्रेस को भी उनके संघर्ष में सहयोग देने के लिए प्रेरित किया। बिहार के अन्य क्षेत्रों में भी किसानों ने भूमि सुधार और करों में कमी की मांग को लेकर आंदोलन किए।

इन संघर्षों का प्रभाव सिर्फ बिहार में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में पड़ा। किसानों के इन आंदोलनों ने कांग्रेस को यह समझने का अवसर दिया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में किसानों का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। चंपारण, गया और अन्य क्षेत्रों के संघर्षों ने यह सिद्ध कर दिया कि किसानों का समर्थन और उनका संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम में अनिवार्य था।

राष्ट्रीय कांग्रेस और किसानों का समर्थन

महात्मा गांधी की भूमिका

महात्मा गांधी ने बिहार के किसानों के संघर्षों में एक केंद्रीय भूमिका निभाई। 1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने भारतीय किसानों की समस्याओं को सामने रखा और ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनका संघर्ष शुरू किया। चंपारण में किसान जमींदारों और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा लगाए गए अत्यधिक करों और शोषण का शिकार हो रहे थे। गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन करते हुए किसानों को संगठित किया और उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी का यह विश्वास था कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सुधार भी जरूरी हैं। चंपारण सत्याग्रह में सफलता ने किसानों को अपनी स्थिति सुधारने के लिए आशा दी और उन्हें यह समझने में मदद की कि संगठित संघर्ष के माध्यम से वे अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। गांधीजी ने न केवल किसानों को अपनी आवाज उठाने का साहस दिया, बल्कि उनके आंदोलन को एक राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता भी दिलवाई। इसके परिणामस्वरूप, कांग्रेस ने किसानों के अधिकारों के लिए राजनीतिक मंच पर मजबूत आवाज उठाई और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा।

कांग्रेस की नीतियाँ और किसानों का समर्थन

कांग्रेस की नीतियाँ किसानों के हितों की रक्षा करने और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण थीं। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, कांग्रेस ने किसानों के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों को प्राथमिकता दी और उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा माना। कांग्रेस ने किसानों की समस्याओं को सार्वजनिक मंच पर लाने के लिए कई आंदोलन किए, जैसे चंपारण सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह। इन आंदोलनों ने किसानों को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की दिशा में प्रेरित किया। कांग्रेस की नीति थी कि किसानों के शोषण को समाप्त किया जाए, भूमि सुधार किए जाएं, और उनकी उपज पर उचित मूल्य की गारंटी दी जाए। इसके अलावा, कांग्रेस ने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि किसानों के खिलाफ किए जा रहे अत्याचारों और शोषण के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं। कांग्रेस ने इन मुद्दों को स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बना लिया और किसानों को विश्वास दिलाया कि उनकी समस्याओं का समाधान केवल स्वतंत्रता में निहित है। कांग्रेस के इन प्रयासों ने किसानों को यह समझने में मदद की कि उनका संघर्ष न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, कांग्रेस की नीतियाँ और किसान आंदोलनों के समर्थन ने किसान वर्ग को एक राजनीतिक आवाज प्रदान की।

कांग्रेस के नेता और बिहार

बिहार में कांग्रेस के नेताओं ने किसानों के संघर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार के नेता जैसे श्री कृष्ण सिंह, आचार्य कृष्ण कुमार सिंह और कर्पूरी ठाकुर ने कांग्रेस की नीतियों को किसानों तक पहुंचाया और उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित किया। विशेष रूप से, श्री कृष्ण सिंह ने चंपारण सत्याग्रह के समय गांधीजी का समर्थन किया और वहां के किसानों को संघटित करने में मदद की। उनका यह योगदान बिहार में कांग्रेस और किसान आंदोलनों के बीच एक मजबूत कड़ी का निर्माण था। बिहार में कांग्रेस के अन्य नेताओं ने भी किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता दी और उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया। इन नेताओं ने किसानों को न केवल उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया, बल्कि उन्हें यह समझाया कि उनका संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा है। कांग्रेस के नेताओं ने बिहार में किसानों के आंदोलनों को राजनीतिक समर्थन प्रदान किया, जिससे किसान न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी आवाज उठा सके। इस प्रकार, बिहार में कांग्रेस के नेताओं

का योगदान किसान आंदोलनों में अत्यधिक महत्वपूर्ण था, और उन्होंने किसानों के संघर्ष को अधिक संगठित और सशक्त बनाया।

1917 से 1942 तक के प्रमुख किसान आंदोलन

चंपारण सत्याग्रह (1917)

चंपारण सत्याग्रह 1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुआ, जो बिहार के किसानों के लिए एक ऐतिहासिक आंदोलन था। चंपारण जिले में किसानों को जमींदारों द्वारा अत्यधिक करों और शोषण का सामना करना पड़ रहा था। अंग्रेजों के द्वारा लगाई गई नील की खेती पर किसानों को मजबूर किया जाता था, जिसके कारण उन्हें आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता था। गांधीजी ने इस अत्याचार के खिलाफ किसानों को एकजुट किया और सत्याग्रह की प्रक्रिया अपनाई। गांधीजी ने चंपारण के किसानों को आत्मविश्वास और अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने न केवल किसानों को संगठित किया, बल्कि ब्रिटिश प्रशासन को उनके शोषण का विरोध करने के लिए मजबूर किया। सत्याग्रह के परिणामस्वरूप, गांधीजी की आक्रामक नीतियों ने ब्रिटिश अधिकारियों को झुकने पर मजबूर किया और चंपारण के किसानों के लिए राहत दिलवाने में सफलता प्राप्त हुई। यह आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ और किसानों के अधिकारों के लिए कांग्रेस का समर्थन मजबूत हुआ। चंपारण सत्याग्रह ने यह सिद्ध किया कि अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से भी सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन संभव है।

बिहार के अन्य किसान आंदोलन

चंपारण सत्याग्रह के बाद, बिहार में अन्य किसान आंदोलनों का सिलसिला भी तेज हो गया। इनमें से एक प्रमुख आंदोलन 1918 में खेड़ा सत्याग्रह था, जिसमें कांग्रेस ने किसानों को अपनी समस्याओं के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। हालांकि यह आंदोलन मुख्यतः गुजरात में था, लेकिन बिहार में भी उसके प्रभाव से किसान आंदोलनों को नया उत्साह मिला। इसके बाद, बिहार के कई जिलों में किसानों ने जमींदारों और ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रदर्शन किए।

सारण, गया, और मुंगेर जिलों में किसानों ने भूमि करों और शोषण के खिलाफ संघर्ष किया। जमींदारी प्रथा और उच्च करों के खिलाफ यह आंदोलन और संगठनों की शुरुआत थी, जो किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए कांग्रेस द्वारा समर्थित थे। बिहार में ये आंदोलन अधिकतर ग्रामीण इलाकों तक फैल गए, जहाँ किसानों ने कांग्रेस के नेतृत्व में अपनी आवाज को बुलंद किया। इन आंदोलनों ने कांग्रेस को यह समझने का अवसर दिया कि किसानों का समर्थन स्वतंत्रता संग्राम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन संघर्षों ने किसानों के लिए सुधारों की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया।

बिहार में किसानों की जागरूकता

1917 से 1942 तक, बिहार में किसानों की जागरूकता में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया, जो स्वतंत्रता संग्राम और कांग्रेस के प्रयासों के कारण संभव हुआ। चंपारण सत्याग्रह के बाद, गांधीजी और अन्य कांग्रेस नेताओं ने बिहार के किसानों को उनके अधिकारों और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक किया। बिहार के किसान पहले अपनी स्थानीय समस्याओं के प्रति जागरूक थे, लेकिन कांग्रेस के नेतृत्व में, उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी आवाज उठाने की दिशा में कदम बढ़ाए।

कांग्रेस ने किसानों को यह समझाया कि उनका संघर्ष केवल व्यक्तिगत और स्थानीय मुद्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा है। गांधीजी ने उन्हें अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान निकालने का मार्ग दिखाया। इसके परिणामस्वरूप, बिहार में

किसानों ने न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए संघर्ष किया, बल्कि वे स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय भागीदारबन गए। इस जागरूकता ने उन्हें न केवल स्थानीय संघर्षों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्हें यह विश्वास भी दिलवाया कि उनके संघर्ष का राष्ट्रव्यापी महत्व है।

कांग्रेस की नीतियों का प्रभाव

कांग्रेस और किसानों के बीच बढ़ता विश्वास

कांग्रेस और किसानों के बीच बढ़ता विश्वास 1917 से 1942 तक की अवधि में विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस ने किसानों के मुद्दों को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया, और यह विश्वास किसानों के बीच बढ़ता गया कि कांग्रेस उनके अधिकारों की रक्षा करेगी। चंपारण सत्याग्रह ने किसानों को यह सिखाया कि संगठित संघर्ष के माध्यम से वे अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। गांधीजी ने न केवल किसानों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाई, बल्कि उन्हें यह भी बताया कि उनकी समस्याओं का समाधान स्वतंत्रता संग्राम के साथ जुड़ा हुआ है। कांग्रेस ने बिहार के किसानों को यह समझाया कि उनका संघर्ष व्यक्तिगत न होकर एक राष्ट्रीय उद्देश्य का हिस्सा है। कांग्रेस की नीतियों ने किसानों को विश्वास दिलवाया कि उनके आंदोलन सिर्फ स्थानीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा हैं। कांग्रेस ने न केवल किसानों की समस्याओं को हल करने के लिए कदम उठाए, बल्कि उनके आत्म–सम्मान और अधिकारों को भी बढ़ावा दिया। इससे किसानों का कांग्रेस पर विश्वास मजबूत हुआ और वे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित हुए।

संघर्ष के परिणाम

कांग्रेस और किसानों के संघर्षों के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण सामाजिक और कानूनी परिवर्तन हुए। चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों ने ब्रिटिश शासन को यह दिखा दिया कि भारतीय जनता, विशेष रूप से किसान वर्ग, अब उनके शोषण के खिलाफ खड़ा हो चुका है। इन संघर्षों का एक प्रमुख परिणाम यह था कि बिहार में किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए कई सुधार किए गए। चंपारण सत्याग्रह के बाद, ब्रिटिश शासन को किसानों की समस्याओं का समाधान करना पड़ा और इस आंदोलन ने भूमि करों में कुछ राहत दी। कांग्रेस ने किसानों के लिए भूमि सुधार, करों की छूट और जमींदारी प्रथा के खिलाफ कानूनों की मांग की। इसके परिणामस्वरूप, कई सुधारक कदम उठाए गए, हालांकि सभी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। लेकिन संघर्ष ने यह सिद्ध किया कि किसानों की आवाज को अनदेखा करना अब संभव नहीं था। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप किसानों की राजनीतिक जागरूकता बढ़ी और उन्हें यह विश्वास हुआ कि उनके संघर्ष का राष्ट्रीय स्तर पर महत्व है। कांग्रेस के समर्थन से किसानों ने अपनी समस्याओं को खुलकर सामने रखा और अपनी स्थितियों को सुधारने के लिए प्रयास किया। इस संघर्ष ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय किसान ब्रिटिश शासन के खिलाफ अब एक सशक्त शक्ति के रूप में उभरे हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में किसानों की भूमिका

कांग्रेस के नेतृत्व में किसानों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से स्थापित किया। चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, और अन्य किसान आंदोलनों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय किसानों का संघर्ष सिर्फ आर्थिक नहीं था, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा था। गांधीजी ने किसानों को यह समझाया कि उनका शोषण ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा किया जा रहा है और इसके खिलाफ लड़ाई केवल उनकी आर्थिक स्थिति के लिए नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के लिए भी जरूरी है। किसानों की बढ़ती जागरूकता और कांग्रेस के समर्थन से, वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हो गए। बिहार में कांग्रेस ने किसानों के आंदोलनों को संगठनात्मक रूप से मजबूत किया, जिससे उनकी राजनीतिक

पहचान बनी और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाने का अवसर मिला। चंपारण, खेड़ा और अन्य आंदोलनों में किसानों का समर्थन कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि इन आंदोलनों ने न केवल स्थानीय स्तर पर बदलाव लाने में मदद की, बल्कि यह एक राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बन गए। किसानों की भागीदारी ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। वे अब सिर्फ अपनी भूमि और करों के लिए नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और समृद्ध भारत के लिए लड़ रहे थे। इस प्रकार, भारतीय किसानों ने स्वतंत्रता संग्राम में एक सशक्त भूमिका निभाई, और उनका योगदान भारतीय राजनीति और समाज के लिए अनमोल था।

निष्कर्ष

1917 से 1942 तक बिहार के किसानों के संघर्षों में राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण और सशक्त रही। यह वह समय था जब भारत में स्वतंत्रता संग्राम ने न केवल राजनीतिक परिवर्तन की दिशा ली, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों, खासकर किसानों, के बीच जागरूकता और संघर्ष की नई लहर भी उत्पन्न हुई। कांग्रेस ने किसानों की समस्याओं को पहचानते हुए उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा बनाने की दिशा में कदम उठाए। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों ने यह सिद्ध कर दिया कि किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष करना स्वतंत्रता संग्राम के उद्देश्य के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है।कांग्रेस ने किसानों को संगठित किया और उन्हें यह समझने का अवसर दिया कि उनका संघर्ष केवल स्थानीय मुद्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक बड़े राजनीतिक संघर्ष का हिस्सा है। चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन करते हुए किसानों के शोषण को चुनौती दी, जिससे बिहार के किसानों के बीच राष्ट्रीय जागरूकता का एक नया दौर शुरू हुआ। कांग्रेस ने किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, किसानों के शोषण और उनके जीवन की परिस्थितियाँ तुरंत सुधर नहीं सकीं, फिर भी इन संघर्षों ने एक नई राजनीतिक और सामाजिक चेतना को जन्म दिया। इसने यह स्पष्ट किया कि किसान वर्ग केवल अपनी समस्याओं के समाधान के लिए नहीं, बल्कि देश की स्वतंत्रता के लिए भी लड़ने में सक्षम है।

अंततः, बिहार के किसानों ने कांग्रेस के नेतृत्व में न केवल अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया, बल्कि वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम हुए। उनके संघर्षों ने यह सिद्ध कर दिया कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता भी आवश्यक है। यह समय भारतीय किसानों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय बना और कांग्रेस के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत था, जो समाज के वंचित वर्गों को अपने संघर्षों में शामिल करने की दिशा में हमेशा प्रतिबद्ध रही।

संदर्भ सूची :

1. Bihar and the Indian National Movement: An Historical Analysis. (2012). *Proceedings of the Indian History Congress*, 73, 120-132.
2. Gandhi, M. (2011). *My Experiments with Truth*. Navajivan Publishing House.
3. Sinha, M. (2006). *Champa: The Story of Bihar's Struggle for Independence*. Patna University Press.
4. Gupta, R. (2013). *Agrarian Reforms and Movements in Bihar: 1857-1947*. National Book Trust.
5. Bose, S. (2014). *Peasant Movements in India, 1900-1947*. Oxford University Press.

6. Ghosh, D. (2015). "Agrarian Reform and the Freedom Struggle: Bihar's Role in the Indian National Movement," *Journal of Indian History*, 49(2), 75-90.

7. Sarkar, S. (2004). *Modern India: 1885-1947*. Macmillan India.

8. Das, S. (2007). "The Role of Bihar in India's Freedom Struggle." *Economic and Political Weekly*, 42(25), 2401-2408.

9. Chakrabarty, K. (2009). "Peasants and Politics in Bihar: From the First War of Independence to the Quit India Movement," *The Indian Historical Review*, 36(1), 103-119.

10. Jha, N. K. (2010). *The Making of Modern Bihar: The Land, The People, and Their Movements*. Kunal Books.

11. Gandhi, M. (1917). *Report of the Champaaran Inquiry Committee*. Government of India Publications.

12. Chatterjee, P. (2001). *The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories*. Princeton University Press.

13. Singh, R. (2012). "The Farmers' Struggles in Bihar: Impact of the 1917 Champaaran Movement." *Social Science Review*, 25(3), 54-67.

14. Kumar, R. (2008). "The Role of Congress in the Agrarian Struggles of Bihar." *Indian Journal of Political Science*, 69(4), 232-245.

15. Bose, A. (1997). *Peasant Uprisings in Colonial India: Bihar and the Revolutionary Movements*. K.K. Publication.